शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

# हिंदी कविताओं में आदिवासी समाज

छविंदर कुमार
सहायक प्राध्यापक (हिंदी विभाग)
राजकीय उत्कृष्ट महाविद्यालय
शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत,

## शोध संक्षेप

*हिंदी कविताओं में आदिवासी समाज अपनी एक विशेष पहचान लेकर उभरा। उनकी समस्याएँ शहरी जीवन से बिलकुल भिन्न हैं। हमारे देश में दस करोड़ से ज्यादा आदिवासी हैं। स्वाधीनता प्राप्ति के सत्तर वर्षों पश्चात भी आदिवासी समाज विकासपथ से कोसों दूर अंधेरे जंगलों में भटकने को मजबूर हैं और जीवनयापन कर रहा है। स्वाधीनता आंदोलन में आदिवासी समाज ने बढ़-चढ़कर भाग लिया था और उस समय राजनेताओं ने इस समाज से बहुत से वादे किए थे जो पूरे नहीं हो पाए। आदिवासी समाज संभवतः भारतीय उप महाद्वीप का सबसे उपेक्षित समाज है। दस- बीस आदिवासियों का मारा जाना या सैंकडों का फर्जी मामलों में जेलों में सड़ना एवं आदिवासी बेटी का अपहरण तथा उसके साथ दरिंदगी करना इत्यादि ये सब मीडिया के लिए कोई ख़बर नहीं होती। आदिवासियों को शिकारी, अपराधी एवं लुटेरे कहने वाले कई आदर्शवादी बनते हैं। क्या इन्होंने कभी यह जानने का यत्न किया है कि आदिवासी कौन हैं ! किन परिस्थितियों में रहते हैं, क्या समस्याएं हैं और क्या जीवनदर्शन है ? जैसे सवालों पर कोई बात नहीं करना चाहता। वास्तविकता यह है कि समाज ने कभी आदिवासियों को अपना समझा ही नहीं। यही कारण है कि आज भी इनके लिए विकास का कोई बुनियादी ढांचा नहीं बन पाया। हमारे समाज की मानसिकता के कारण आदिवासी इस प्रकार का नारकीय जीवन जी रहे हैं और निर्धनता, भूखमरी, अज्ञानता, निरक्षरता एवं विस्थापन न हो पाना जैसी समस्याओं से जूझ रहे हैं। हिंदी के साहित्यकारों ने अपनी कविताओं में आदिवासियों की विपरीत परिस्थितयों को उजागर किया है।*

## प्रस्तावना

सदियों से ही आदिवासी समाज को एक पिछड़ा समाज माना गया है। किंतु इक्कीसवीं शताब्दी में भूमंडलीकरण के दौर में आज शिक्षा को आदिवासी समाज तक पहुंचने से वो अंधकार दूर हुआ है और अधिकारों के प्रति सजगता उत्पन्न हुई है। आज आदिवासी अपने जीवन की पीड़ा को साहित्य के माध्यम से समाज के समक्ष लाने की कोशिश कर रहे हैं, उनका अन्य समुदायों से मिलना-जुलना बढ़ा है। आज आदिवासी साहित्य प्रचुर मात्रा में लिखा जा रहा है और कुछ हद तक लोगों की सोच भी आदिवासियों के प्रति परिवर्तित हुई है। साहित्य समाज का दर्पण होता है जिस तरह का समाज होगा, साहित्य भी वैसा ही होता है। आदिवासी साहित्य जीवन व जगत का साहित्य है। वह प्रकृति का सहयोगी और हर तरह की विषमता से दूर है। उसके लिए प्रकृति सेवा ही सब कुछ है, तभी तो आदिवासी को भूमिपुत्र, प्रकृति के उपासक व अरण्य संरक्षक भी कहा जाता है। आदिवासी समाज अन्याय का विरोधी और सामाजिक न्याय का पक्षधर रहा है। मैनेजर पांडेय इस बात की वकालत करते हैं कि जब तक दलित स्त्री और आदिवासी समाज हिंदी

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

साहित्य के घेरे के अंदर नहीं आएगा तब तक हिंदी साहित्य को पूर्णता प्राप्त नहीं हो सकती।"

**कविताओं में आदिवासी समाज**

आदिवासी परिवेश पर साहित्य की हर विधा में लेखन कार्य हो रहा है, लेकिन साहित्य की सबसे प्राचीन व प्रमुख विधा कविता में आदिवासी स्वर की व्यापकता प्रमुख रूप से देखी जा सकती है। वर्तमान में अनेक कवियों/ कवयित्रियों ने आदिवासी परिवेश को अपने काव्य का विषय बनाया है। इनमें हरिराम मीणा, मधु कांकरिया, रमणिका गुप्ता, निर्मला पुतुल, अनुज लुगुन, महादेव टोप्पो, संजीव बख्शी, विनोद शुक्ल, विनायक तुकाराम एवं बाहरू सोनमणे इत्यादि प्रमुख हैं। इससे पूर्व की रचनाओं में नागार्जुन, लीलाधर जगूड़ी अपनी रचनाओं में आदिवासी परिवेश को चित्रित कर चुके हैं। नागार्जुन हिंदी के संभवतः पहले कवि हैं जिन्होंने आदिवासी समाज पर दर्जन भर कविताएं लिखी। आदिवासियों की वेदना को नागार्जुन ने अभिव्यक्त किया है :

हमारी धरती हमें वापस कर दो
हमें झंडे वाली आजादी नहीं चाहिए
वापस लेके रहेंगे, हम अपने जंगल
अपनी पगडंडियां, अपनी लाल मिट्टी
खबरदार खबरदार ! !
हम भूले नहीं हैं तीर धनुष चलाना
हमें नहीं चाहिए तुम्हारा पटना
नहीं चाहिए तुम्हारी दिल्ली।"1

लीलाधर जगूड़ी ने भी अपनी 'बची हुई पृथ्वी नामक कविता संग्रह में पुलिस की कार्य प्रणाली व उनके आतंक से व्यथित आदिवासी स्त्री की दशा का चित्रण किया है। वे लिखते हैं

"पुलिस वाले पर आदमियों की आंख थी
इसलिए रंगतू की नंगी औरत
बाहर नहीं निकल सकी, लेकिन भीतर
बच्चे उसे शरीर से पहनावे की तरह चिपके हुए थे।" 2

नागार्जुन एक स्पष्ट वक्ता थे और सच्चाई उजागर करने में किसी से डरते नहीं थे इसी कारण तो इन्हें दूसरा कबीर भी कहा जाता है। ये फक्कड़ स्वभाव के थे और आदिवासियों की अनुभूति का यथार्थ चित्रण किया है। अपनी कविता में लिखते हैं कि जब तक आदिवासी भाई शहरों में लकड़ी का गट्ठर नहीं बेचते तब तक उनके चूल्हे नहीं जलते, खाना नहीं पकता है :

"मुझे मालूम भी है
भीलों के चूल्हे तब सुलगेंगे
जब लौट आएगी उनकी लकड़ियां
पहुंचा कर लकड़ी के गट्ठे
गांव कस्बे और शहर।"3

बाहरू सोनमणे मूलतः मराठी साहित्यकार हैं। इन्होंने अपनी कविता 'हम स्टेज पर गए नहीं में आदिवासी समाज का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। इस कविता में आदिवासी कवि ने अपनी उस वेदना को निराला जी की तरह अभिव्यक्त किया है, जिन अश्रुओं से उनका काव्य बना। प्रश्न है कि किस प्रकार इनको सभ्य समाज ने दबाकर रखा है और इनकी उपेक्षा की जाती है यहां कुछ पंक्तियां हैं :

"हम स्टेज पर गए ही नहीं
और हमें बुलाया भी नहीं गया
उंगली के इशारे से
हमें अपनी जगह दिखा दी गई
हम वहीं बैठ गए
हमें शाबाशी मिली
और वे मंच पर खड़े होकर
हमारा दुःख हम से ही कहते रहे
हमारा दुःख हमारा ही रहा

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कभी उनका नहीं हो पाया।"4

महादेव टोप्पो की मूलतः झारखंड से संबंधित हैं। इन्होंने त्रासदी कविता में आदिवासियों की दुर्दशा व उनके जीवन की विडम्बना को अपनी कविताओं में उद्घाटित किया है। कहते हैं :

"इस देश में पैदा होने का
मतलब क्या है
जानते हो भाई ? नहीं
देश में पैदा होने का मतलबहै
आदमी का जातियों में बंट जाना
और गलती से अगर तुम हो गए पैदा जंगल में
तो तुम कहलाओगे
आदिवासी-वनवासी-गिरीजन वगैरह-वगैरह
आदमी तो कम से कम कहलाओगे नहीं।"5

महादेव टोप्पो आदिवासियों को जागृत करते है कि उठो जागो और अपनी एक पहचान बनाओ। कुछ नया करना होगा। क्यों कि हमारा अपना एक अतीत रहा है और विशिष्ट अरण्य सभ्यता व संस्कृति हमारी पहचान रही है अतः उसको जानो, शिक्षित बनो ताकि इनका मुकाबला कर सको अन्यथा हम जंगली ही कहलाएंगे। पंक्तियां हैं :

"इससे पहले कि वे पुनः तुम्हारा अपने ग्रंथों में
बंदर, भालू या किसी अन्य जानवर के रूप में
वर्णन करें ? तुम्हें अपनी आदमी होने की
तलाशनी होगी परिभाषा।"6

आदिवासी समाज में जन्मे, पले और बढ़े हुए डॉ. रामदयाल मुंडा आदिवासी समाज के एक प्रबुद्ध दार्शनिक, मानव विज्ञानी, अनुसंधित्सु, शिक्षक एवं साहित्यकार रहे हैं। उनकी कविताओं पर हिंदी में दो लघु पुस्तक हैं। इन कविताओं में मुंडा ने आदिवासी जीवन, प्रकृति और मनुष्य का अंतरंग संबंध को चित्रित किया है और साथ में आज की शिक्षित समाज की सोच को भी उजागर किया है। इन कविताओं के माध्यम से मुंडा ने देशज संस्कृति व अरण्य की दारूण अवस्था को सजीव रूप में प्रस्तुत कर हिंदी काव्य जगत के सामने लाया है।

आदिवासियों के विस्थापन के दर्द को मुंडा ने अपनी 'वापसी' कविता में अनुभव किया है। विस्थापित आदिवासी आसाम के चाय बागानों से अपने देहात की स्मृति में खो जाते हैं। जैसे :

"गांव को जाती लाल मिट्टी की सड़क
अब तो पक्की हो गई होगी।
वह बूढ़ा ओझा, रोंदोगुरू अब क्या करता होगा
अस्पताल की दवादारू और सूई टिकिया के सामने
उसकी वह झाड़ फूंक अब कमजोर पड़ गई होगी।"7

जंगल आदिवासी के पितातुल्य है और इस बात का भी कविता में उल्लेख है :

मेरे ही सामने उस ठीकेदार साहब ने
नागों की झोंपड़ी को देखकर
अपने इंजीनियर साथी से कहा था
बेवकूफ है साले, टिंबर से घिरे हैं पर
ढंग का मकान बनाने की भी अक्ल नहीं आई।"8

मुण्डा जी आदिवासियों के सच्चे भूमिपुत्र हैं। उनकी पीड़ा को बखूबी समझते हैं। गरीबी, भुखमरी, शोषण, अंधविश्वास एवं पलायन इत्यादि इनकी समस्याएं हैं जिसे मुण्डा ने अपनी कविताओं में स्थान दिया है ।

पुण्यप्रसून बाजपेयी का मत है कि आदिवासी स्त्रियों की दशा कुछ ऐसी है कि पुलिस प्रशासन जब चाहे जिसे उठा ले और बलात्कार करें फिर रहम खाएं तो जिंदा छोड़े या मार ही दे कोई फर्क नहीं पड़ता। सोना, सोरों और सेवती जैसी महिलाओं के साथ कुछ इस तरह ही हुआ।'9

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

आदिवासी कवयित्रियों में निर्मला पुतुल संताली भाषा की कवयित्री हैं। इन्होंने आदिवासियों की दीन-हीन दुर्दशा, उत्पीड़न, हर तरह के शोषण व उससे प्रज्ज्वलित विद्रोह की भावना को काव्य में स्थान दिया है। हर तरह से इनका समाज ने शोषण किया है। यही तो कारण है कि आदिवासी समाज में पुरुष हो या नारी तथा कथित ऊंची जातियों द्वारा इतने विवश कर दिए गए हैं कि प्रतिकार की आवाज नहीं निकल पाते। शायद इसलिए बस्ती में आग लगे, जुलूस निकले, कुछ भी हो जाए पुरुष ने अपने दुःख को और अपने साहस को मुरली की आवाज में विलुप्त कर दिया। उसकी स्त्री हर बार चुप रहकर उसकी निष्क्रियता को नहीं सह सकती। पंक्तियां हैं :

इस बार मैं चुप नहीं रहूंगी
छीन कर तोड़ दूंगी तुम्हारी बांसुरी
कि देखो इस बार
वो मुझे उठाने आ रहे हैं।'10

आदिवासी स्त्रियों के जीवन की बहुत बड़ी हकीकत है। कैसी हैवानियत की शिकार होती है। ये स्त्रियां आज भी घर का दरवाजा खोलकर सोने से डरती हैं। टीवी और अखबार के पन्ने रंगते रहते हैं। जैसे :

चाहकर भी भूल नहीं सकती / कैसे भूल जाऊं वह राक्षसी रात / जिसमें दुनिया की सारी संवेदनाएं / मेरा सबसे ऊंचा विश्वास / पवित्र रिश्ते की आस्था।"11

निर्मला पुतुल ने आदिवासी समाज की ग़रीबी और कमाने के लिए बेटियों का शहर आना और वहां उनके साथ नौकरी के नाम पर होनेवाले आर्थिक शोषण व यौन उत्पीड़न का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है। बड़े-बड़े शहर व महानगर इन गांवों की बेटियों को निगलने का कार्य कर रहे हैं। निर्मला पुतुल अपने देश की इन्हीं बेटियों को ढूंढ रही है। 'तुम कहां हो माया' कविता में रोजगार की तलाश में दिल्ली पहुंची आदिवासी बेटी से यह प्रश्न करते हुए उनके भयावह दैनिक एवं मानसिक शोषण की ओर इशारा किया है।

"कहां हो तुम माया कहां हो
कहीं हो भी सही सलामत या
दिल्ली निगल गई है तुम्हें
क्या सचमुच इतने लोगों से होकर गुजरी तुम
या वे सबके सबही गुजरे अनचाहे तुम्हारी
जिंदगी से ? दिल्ली नहीं है हम जैसों के लिए
क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता माया
कि वह ऐसा शमशान है जहां
जिंदा दफन होने के लिए भी लोग लाइन में खड़े हैं
झारखंड की धरती संताल ? परगना की माटी
दुमका के पहाड़ ? और काठीकुंड के उजड़ते जंगल
पुकार रहे हैं तुम्हें
तुम जहां भी हो माया लौट आओ।"12

निर्मला पुतुल ने शोषकों, अत्याचारी एवं तथाकथित संरक्षकों के काले कारनामों को उजागर किया। आदिवासी स्त्रियों को कुछ लोग मात्र भोगविलास की वस्तु समझते हैं और उसको नग्न देखना ही पसंद करते हैं। ऐसे पुरुष समाज का पर्दाफाश इनकी कविता 'नगाड़े की तरह बजते शब्द' में देखने को मिलता है :

"ये वह लोग हैं जो दिन के उजाले में
मिलने से कतराते हैं
और रात के अंधेरे में
मिलने का मांगते हैं आमंत्रण
ये वो लोग हैं
जो हमारे बिस्तर पर करते हैं
हमारी बस्ती का बलात्कार
और हमारी ही जमीन पर खड़े हो

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

पूछते हैं हमसे हमारी औकात।'13

निर्मला पुतुल की कविता को झारखंड के इतिहास और उसके जनजीवन से अलग करके नहीं समझ सकते, क्योंकि इन कविताओं में उनका इतिहास नगाड़े की चोट पर बोलता है। निर्मला पुतुल की लड़ाई समाज के विरुद्ध ही नहीं है, बल्कि अपने समुदाय में बढ़ रहे ढोंगियों, उन धर्म के ठेकेदारों से भी है। आदिवासियों का प्रधान जब आदिवासी बेटियों के देह व्यापार का सौदागर बन जाता है तब कवयित्री लिखती हैं :

"कैसा बिकाऊ है तुम्हारी बस्ती का प्रधान
जो सिर्फ एक बोतल देशी दारू में रख देता है
पूरे गांव को गिरवी
और ले जाता है कई लड़कियों को गट्ठर की तरह
लादकर अपनी गाड़ियों में तुम्हारी बेटियों को
हजार पांच सौ हथेलियों पर रखकर।"14

निर्मला पुतुल ने अपनी कविताओं में आदिवासी समाज में आयी चेतना को भी रेखांकित किया है। वे आधुनिक तकनीक का प्रयोग भी कर रहे हैं।

"चाहती हूं मैं नगाड़े की तरह बजे
मेरे शब्द और निकल पड़े लोग
अपने घरों से सड़कों पर।"15

आदिवासी साहित्यकारों में हरीराम मीणा ने गद्य और पद्य दोनों विधाओं में समान रूप से लेखनी चलाई है। उनका काव्य संग्रह 'सुबह के इन्तजार में' नाम से प्रकाशित हुआ है। जिसमें कुछ कवितायें अंडमान निकोबार के आदिवासी समाज पर केन्द्रित हैं। इस काव्य संग्रह के अतिरिक्त इनके दूसरे काव्य संग्रह 'समकालीन आदिवासी कवितायें' में भी कवितायें हैं। इनकी कविताओं में ऐतिहासिक पात्रों को विषय बनाया गया है जैसे बिरसा मुंडा की स्मृति में एक कविता' बिरसा मुंडा की याद में' उनके बलिदान पर लिखी गयी है, जिसमें उनके साथ जेल में की गयी निर्दयता व उत्पीडन का और साथ में उन शोषकों का भी चित्रण है। बिरसा मुंडा ने लड़कपन में ही इन शोषकों के खिलाफ आवाज उठाई और इनका मुकाबला किया। हरीराम मीणा ने उनके व्यक्तित्व को इस प्रकार व्यक्त किया है :

"मैं केवल देह नहीं
मैं जंगल का पुश्तैनी दावेदार हूँ
पुश्ते और दावे मरते नहीं
मैं भी मर नहीं सकता
मुझे कोई जंगल से बेदखल नहीं कर सकता
उल गुलाल ! उल गुलाल !! उल गुलाल।"16

सुप्रसिद्ध साहित्यकार विनोद कुमार शुक्ल ने भी अपने काव्य में आदिवासियों के शोषण, भुखमरी, कुपोषण व अन्य पीड़ाओं को उजागर करने की कोशिश की है :

"सचमुच यह राख ही जानती है
जलने का अनुभव और कोई नहीं।"17

अन्न के बिना मालूम नहीं कितने आदिवासी काल का ग्रास बन गए हैं। पता नहीं कितने बच्चे कुपोषण से ग्रस्त हैं। इस पर व्यवस्था भी खामोश है और ये भी यथार्थ है कि किसी भी तरह के मीडिया को ये मालूम नहीं होता है और न ही वो जानने की कोशिश करता है। यह कहीं अखबार में भी नहीं छपता। यही तो सच्चाई है।

बहुत बरस से जंगल में
बहुत से आदिवासी भूख से मर जाते हैं।"18

इतना ही नहीं कैसे आदिवासियों पर अत्याचार किए जाते हैं। पुरूषों को बंधुआ मजदूर बनाया जाता है और स्त्रियों से दुराचार किया जाता है, बोलने पर हत्या की जाती है। उनका क्रय विक्रय होता है। आदिवासी क्षेत्रों में राजनेता लोग चुनावी शंखनाद में बहुत सेवा देकर जाते हैं। नये-नये सपने उन्हें दिखाए जाते हैं तथा उनकी निरक्षरता का पूरा लाभ ये लोग लेते हैं, लेकिन अब

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

आदिवासी इनकी चापलूसी को समझने लगे हैं कि ये नेता लोग सिर्फ बातों से ही विकास करते हैं। इनकी कथनी और करनी में अंतर होता है :

"नेताजी के बड़े बोल सुन,
चिथड़ों में लिपटा अधनंग श्रोता
उठ खड़े हुए
और कहने लगे
साहब
क्रान्ति किसे कहते हैं
तन ढंकने को मिलने को क्रान्ति कहते हैं।"19

आधुनिक विकास के देवताओं ने आदिवासियों के शोषण, भ्रष्टाचार, विस्थापन, पलायन और बेकार करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। आदिवासी समाज की स्त्रियों की प्रत्येक कार्य में कुशलता होती है और लगन से अपना कार्य करती है। पलाश के पत्तों से पतले, बांस से टोकरियां इत्यादि बनाकर अपना व बच्चों का निर्वाह करती है, लेकिन आज तो प्लास्टिक युग है :

"तुम्हारे हाथों बने पत्तल पर भरते हैं पेट हजारों ?
पर हजारों पत्तल भर नहीं पाते तुम्हारा पेट ?
ये कैसी विडम्बना है कि ज़मीं पर बैठ बुनती हो चटाइयां
और पंखा बनाते टपकता है तुम्हारे करियारे देह से टप-टप पसीना।"20

डॉ.भगवान की कविता 'आदिवासी मोर्चा' में आदिवासी विद्रोह, उनका संसद तक पहुंचना एवं पुलिस बल द्वारा उनकी आवाज को कुचलने जैसी घटनाओं का सजीव बिंब प्रस्तुत किया है जैसे :

"संसद भवन केप्रांगण में
जब पहुंच गया मोर्चा
बरस पड़ी पुलिस की अनगिनत लाठियां
जैसे झेली थी सीने में पूर्वजों ने अंग्रेजों की गोलियां
तितर-बितर हो गई भीड़
भागने लगी हमारी बहू-बेटियां
जैसे भगाई जाती है जंगल से भेड़ बकरियां"21

संजीव बख्शी ने बक्सर के आदिवासियों के जीवन पर दो काव्य संग्रह लिखे एक है 'मौहाझाड़ को लाईफ ट्री कहते हैं जयदेव बघेल' तथा दूसरा काव्य संग्रह 'सफेद से कुछ ही दूर पर पीला रहता था।' इन दोनों काव्य संग्रहों में बस्तर के आदिवासी जीवन की संवेदना को ही अनुभव किया है। आदिवासियों के क्षेत्रों से जंगल काटे जा रहे हैं, राष्ट्रीय अभयारण्य स्थल बनाए जा रहे हैं। औद्योगीकरण की बाढ़ में उद्योग, सड़कें, रेलपटरियों व सुरंगें बनाने का कार्य दिन-रात युद्धस्तर पर हो रहा है। जंगल, पहाड़, पठार सभी मैदान बन गए हैं। वन्य जीव व वन्य औषधियां सभी समाप्त हो गई हैं। कई जगह पर खुदाई से प्राकृतिक संसाधनों को निकालने का कार्य हो रहा है। ये सत्तर फीसदी कार्य आदिवासी क्षेत्रों में ही होरहा है और इन्हें वहां से जबरदस्ती खदेड़ा जा रहा है। उनके विस्थापन की कोई व्यवस्था नहीं है और जगह-जगह भटकने को मजबूर हैं। संजीव बख्शी अपनी कविता 'जंगल का सौगान' में कहते हैं जिस प्रकार जंगली जानवरों को सर्कस में रखकर दिखाया जाता है, उसी प्रकार यदि जंगल ऐसे ही कटते रहे तो पेड़ों को भी वैसे ही दिखाया जाएगा।

"कल सागौन, शीशम दिखाये जायेंगे
साथ में रखी जाएंगी वह मिट्टी, बताया जाएगा
इस मिट्टी में, सागौन, शीशम उगा करते थे
देखने की लगेगी टिकट
बच्चे पास जाकर छुएंगे, देखेंगे
कहेंगे पापा, पापा जंगल का सागौन

जंगल का शीशम हमने छू लिया
हम डरे नहीं।"22

संजीव बख्शी की ही मुख्यधारा नामक कविता में बस्तर के आदिवासियों के जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। उनके विकास को राजनेताओं के द्वारा किया गया आश्वासन कितना खोखला है, कैसे वो इन्हें ठगते हैं और इनका मत छीन लेते हैं :

"शुरू-शुरू तो जानते, मंच पर जो होते भाषण
गाड़ियों में भर-भरकर उन्हें ले जाया जाता यहां-वहां
यही है मुख्यधारा पर, यहां भी दोहराया गया हमें तुम्हें
अच्छा हुआ तुमने पूछा नहीं का है मुख्य धारा।"23

आदिवासी कवयित्रियों में भुजंग मेश्राम एक सुप्रसिद्ध कवयित्री है । उनका आदिवासियों पर रचित काव्य संग्रह का नाम है 'उलगुलान' इस काव्य संग्रह के लिए ये कई पुरस्कार प्राप्त कर चुकी हैं। ईसाई पादरी किस तरह आदिवासियों को प्रभावित कर उनका धर्म परिवर्तन करने की कोशिश कर रहे हैं और आदिवासियों पर इसका क्या प्रभाव पड़ा है ये इनकी कविता 'गाडफादर' में स्पष्ट है। पंक्तियां हैं :

"वे आए तब
उनके हाथ में था बायबल
और हमारे हाथों में ज़मीं
वे बोले ईश्वर के पास भेद नहीं है
कोई काला या गोरा, करो प्रार्थना
बंद करो आंखें, हमने बंद की आंखें
जब आशा से आंखें खोली तो देखा
उनके हाथों में ज़मीं थी
और हाथों में बायबल।"24

आदिवासी कवियों में कवि, कथाकार लक्ष्मी नारायण पयोधि की कविताओं में भी बस्तर का आदिवासी परिवेश उभर कर सामने आया है। वहां की प्राकृतिक सुंदरता एवं जंगलों को दिखाया गया है :

"चट्टानों को काटती चिता नदी
मुड़ जाती अचानक जंगलों में पगडंडी की तरह
गांव के किनारे-किनारे।"25

साथ में इन्होंने आदिवासी, अरण्यवासी समाज के अतीत का परिचय भी दिया है।

## निष्कर्ष

अतः हम कह सकते हैं कि हिंदी कविताओं में आदिवासी समाज की समस्याएं, संवेदना, पीड़ा से उत्पन्न संघर्ष, उनके संस्कार एवं संस्कृति को प्रकट किया है। आज तक आदिवासियों को समाज ने सदैव जाति, वर्णभेद व्यवस्था, हमलों इत्यादि में ही उलझाए रखा और विकास के नाम पर इन्हें इनके पितातुल्य वनों से खदेड़ा गया। अज्ञानता, निरक्षरता और पिछड़ेपन के कारण इनका खूब शोषण किया गया। निरक्षरता के कारण ही तो यह समाज सदियों से उपेक्षित रहा और इनकी लोककला और साहित्य भी इस कारण मौखिक ही रहा है। दूसरे उनकी भाषा के अनुरूप लिपि का विकसित न हो पाना। यही कारण है कि साहित्य जगत में आदिवासी रचनाकार और साहित्य अन्य साहित्य की तुलना में न के बराबर है। वर्तमान में आदिवासी समाज भी शिक्षा के क्षेत्र में दिन-प्रतिदिन नई बुलंदियों को छू रहा है तथा देश की तस्वीर और तकदीर को बदलने में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। शिबू सोरेन और हेमंत सोरेन जैसे आदिवासी झारखंड का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। आदिवासी महिला सोना झारिया जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में कंप्यूटरसाइंस की प्रोफेसर रही है और

आजकल उन्हें झारखंड सरकार ने दूमका स्थित सिद्धु कानू विश्वविद्यालय का कुलपति नियुक्त किया है । देश में करीब आठ सौ विश्वविद्यालय है और वंचित समाज से सोना झारिया विश्वविद्यालय की पहली महिला कुलपति बनी हैं। ये महिला अन्य आदिवासी वंचितों के लिए एक प्रेरणा है।

## संदर्भ ग्रन्थ

*1 शोभाकांत, नागार्जुन रचनावली भाग दो, पृष्ठ 48*
*2 लीलाधर जगूड़ी, बची हुई पृथ्वी, पृष्ठ 101, 102*
*3 नागार्जुन रचनावली भाग दो, पृष्ठ 48, 49*
*4 विशाला शर्मा/दत्ता कोल्हारे, आदिवासी साहित्य और संस्कृति, पृष्ठ 22*
*5 रमणिका गुप्ता, आदिवासी स्वर और शताब्दी, पृष्ठ 49*
*6 वही, पृष्ठ 48*
*7 रामदयाल मुंडा, वापसी, पुनर्मिलन और अन्य गीत, पृष्ठ 1, 2*
*8 वही, पृष्ठ 10*
*9 पुण्यप्रसून वाजपेयी आदिवासियों पर टाडा, पृष्ठ 57*
*10 निर्मला पुतुल नगाड़े की तरह बजते शब्द, तीसरा संस्करण, 2012, पृष्ठ 17*
*11 वही, पृष्ठ 20*
*12 निर्मला पुतुल तुम कहाँ हो माया कविता, अपने घर की तलाश में, पृष्ठ 31*
*13 वही, पृष्ठ 53*
*14 वही, पृष्ठ 21*
*15 वही, पृष्ठ 93*
*16 हरीराम मीणा, सुबह के इन्तजार में, पृष्ठ 9*
*17 विनोद कुमार शुक्ल, सब कुछ होता बचा रहेगा, पृष्ठ 34*
*18 वही, पृष्ठ 35*
*19 उषा किरण आत्राम, क्रान्ति, पृष्ठ 26*
*20 वही, पृष्ठ 27*
*21 डॉ.भगवान गव्हाड़, आदिवासी मोर्चा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 41*
*22 संजीव बख्शी, मोहा झाड़ को लाईफ ट्री कहते हैं, पृष्ठ 66*
*23 वही, पृष्ठ 67*
*24 डॉ.रमेश संभाजी कुरे, पृष्ठ 41,*
*25 लक्ष्मीनारायण पयोधि, सोमारू, पृष्ठ 47*